प्रशिक्षण साहित्य सं0– 5

# घर के अहाते में मुर्गीपालन
# (बैकयार्ड पोल्ट्री)

सत्यमेव जयते
Department of Science & Technology
Govt. of India

अन्तर्गत

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार
द्वारा उत्प्रेरित एवं वित पोषित परियोजना
"ग्रामीण महिला तकनीकी पार्क"

संचालन– कृषि विज्ञान केन्द्र–द्वितीय, कटिया, सीतापुर

# घर के अहाते में मुर्गीपालन (बैकयार्ड पोल्ट्री)

## परिचय

भारत एक विकासशील देश है, जहाँ जनसंख्या का एक बहुत बड़ा हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है। ग्रामीण क्षेत्र का जीवन स्तर शहरों में रहने वालों की तुलना में अपेक्षाकृत समृद्ध नहीं है। विगत वर्षों से भारत सरकार ने कुक्कुट पालन को ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सुधारने का एक उत्तम साधन मानते हुए इसके विकास हेतु अनेक प्रयास किए है। आज मुर्गीपालन एक दृढ उद्योग का रूप ले चुका है जिसे ग्रामीण महिलायें भी आसानी से अपना कर परिवार के लिए अतिरिक्त आय का सृजन कर सकती हैं। वैज्ञानिकों द्वारा किए जा रहे अनुसंधानों से विकसित नवीनतम प्रौद्योगिकी को अपनाने से मुर्गीपालन के क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त हुई है। व्यवसायिक प्रजातियों के विकास से प्रतिवर्ष प्रति व्यक्ति अण्डों एवं मास की उपलब्धता 1961 में 7 अंडे व 188 ग्राम से बढ़कर वर्तमान में लगभग 45 अंडे व 1000 ग्राम अनुमानित है। यद्यपि इसमें वास्तविक वृद्धि हुई है पर ग्रामीण लोगों को इसकी उपलब्धता कम व अत्यंत उच्च कीमतों पर होती है। भारत में कुपोषण एवं गरीबी की समस्या को दूर करने के लिए पारम्परिक मुर्गी पालन अथवा घर के पिछवाड़े मुर्गी पालन की यह पद्धति प्राचीन काल से प्रचलित है। इसमें प्राय 5–20 मुर्गियों का छोटा सा समूह एक परिवार के द्वारा पाला जाता है, जो घर एवं उसके आस–पास में अनाज के गिरे दाने, झाड़–फूसों के बीच कीड़े–मकोड़े, घास की कोमल पत्तियाँ तथा घर या होटल व ढाबे की जूठन आदि खाकर अपना पेट भरती है। केवल प्रतिकूल परिस्थितयों में निम्न कोटि का थोड़ा सा अनाज खिलाने की आवश्यकता होती है। इसके रात्रि विश्राम के लिए घर के टूटे–फूटे भाग व खंडहर काम में लाए जाते है। इस प्रकार घर के रखरखाव एवं खाने–पीने पर कोई खास खर्च नही आता है। साथ ही ग्रामीण परिवारों के लिए उच्च गुणवत्ता का प्रोटीन स्रोत उपलब्ध हो जाता है एवं कुछ मात्रा में मांस व अंडा बेच लेने से परिवार को अतिरिक्त आमदनी हो जाती है।

## नस्ल का चुनाव

वास्तव में पारम्परिक कुक्कुट पालन की भारत में अधिक प्रांसगिकता है। इस पद्धति से मुर्गी पालन के लिए उपलब्ध प्रजातियों में कारी निर्भीक, कारी देवेन्द्र, कारीब्रो–धनराजा , कारी श्यामा व वनराजा प्रमुख है। देशी प्रजाति के पक्षियों की वृद्धि दर व उत्पादन कम होने की वजह से इनकी लोकप्रियता घटती गई। हाल ही में केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान इज्जतनगर, बरेली में देशी और उन्नत नस्ल की विदेशी प्रजाति की मुर्गियों को मिलाकर कुछ संकर प्रजातियाँ विकसित की गई है। इनमें कैरी श्यामा, कैरी निर्भीक, हितकारी एवं उपकारी प्रमुख है। ये प्रजातियाँ भारत के वातावरण एवं परिस्थितियों में अच्छा उत्पादन देने में सक्षम साबित हुई है और इनकी वार्षिक उत्पादन क्षमता लगभग 180–200 अंडे की है।

## घर के पिछवाड़े में पाले जाने वाली नस्लें

## केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर द्वारा विकसित नस्लें

### कारी निर्भीक (असील क्रॉस)–

- असील का शाब्दिक अर्थ वास्तविक या विशुद्ध है। एसील को अपनी तीक्ष्णता, शक्ति, मैजेस्टिक गेट या कुत्ते से लड़ने की गुणवत्ता के लिए जाना जाता है। इस देशी नस्ल को एसील नाम इसलिए दिया गया क्योंकि इसमें लड़ाई की पैतृक गुणवत्ता होती है।
- इस महत्वपूर्ण नस्ल का गृह आंध्र प्रदेश माना जाता है। यद्यपि, इस नस्ल के बेहतर नमूने बहुत मुश्किल से मिलते हैं। इन्हें शौकीन लोगों और पूरे देश में मुर्गे की लड़ाई–शो से जुड़े हुए लोगों द्वारा पाला जाता है।
- एसील अपने आप में विशाल शरीर और अच्छी बनावट तथा उत्कृष्ट शरीर रचना वाला होता है।
- इसका मानक वजन मुर्गों के मामले में 3 से 4 किलो ग्राम तथा मुर्गियों के मामले में 2 से 3 किलो ग्राम होता है।
- यौन परिपक्वता की आयु (दिन) 196 दिन है।
- वार्षिक अंडा उत्पादन (संख्या)– 92
- 40 सप्ताह में अंडों का वजन (ग्राम)– 50

**कारी श्यामा (कडाकनाथ क्रॉस)–**

- इसे स्थानीय रूप से "कालामासी" नाम से जाना जाता है जिसका अर्थ काले मांस (फ्लैश) वाला मुर्गा है। मध्य प्रदेश के झाबुआ और धार जिले तथा राजस्थान और गुजरात के निकटवर्ती जिले जो लगभग 800 वर्ग मील में फैला हुआ है, इन क्षेत्रों को इस नस्ल का मूल गृह माना गया है।
- इनका पालन ज्यादातर जनजातीय, आदिवासी तथा ग्रामीण निर्धनों द्वारा किया जाता है। इसे पवित्र पक्षी के रूप में माना जाता है और दीवाली के बाद इसे देवी के लिए बलिदान देने वाला माना जाता है।
- पुराने मुर्गे का रंग नीले से काले के बीच होता है जिसमें पीठ पर गहरी धारियां होती हैं।
- इस नस्ल का मांस काला और देखने में विकर्षक (रीपल्सिव) होता है, इसे सिर्फ स्वाद के लिए ही नहीं बल्कि औषधीय गुणवत्ता के लिए भी जाना जाता है।
- कडाकनाथ के रक्त का उपयोग आदिवासियों द्वारा मानव के गंभीर रोगों के उपचार में कामोत्तेजक के रूप में इसके मांस का उपयोग किया जाता है।
- इसका मांस और अंडे प्रोटीन (मांस में 25–47 प्रतिशत) तथा लौह एक प्रचुर स्रोत माना जाता है।
- 20 सप्ताह में शरीर वजन (ग्राम)– 920
- यौन परिपक्वता में आयु (दिन)– 180
- वार्षिक अंडा उत्पादन (संख्या)– 105
- 40 सप्ताह में अंडे का वजन (ग्राम)– 49
- जनन क्षमता (प्रतिशत)– 55
- हैचेबिल्टी एफ ई एस (प्रतिशत)– 52

**हितकारी (नैक्ड नैक क्रॉस)–**

- नैक्ड नैक परस्पर बड़े शरीर के साथ–साथ लम्बी गोलीय गर्दन वाला होता है। जैसे इसके नाम से पता लगता है कि पक्षी की गर्दन पूरी नंगी या गालथैली (क्रॉप) के ऊपर गर्दन के सामने पंखों के सिर्फ टफ दिखाई देते हैं।
- इसके फलस्वरूप इनकी नंगी चमड़ी लाल हो जाती है विशेषरूप से नर में यह उस समय होता है जब ये यौन परिपक्वतारूपी कामुकता में होते है।
- केरल का त्रिवेन्द्रम क्षेत्र नैक्ड नैक का मूल आवास माना जाता है।
- 20 सप्ताह में शरीर का वजन (ग्राम)– 1005
- यौन परिपक्वता में आयु (दिन)– 201
- वार्षिक अंडा उत्पादन (संख्या)– 99
- 40 सप्ताह में अंडे का वजन (ग्राम)– 54
- जनन क्षमता (प्रतिशत)– 66
- हैचेबिल्टी एफ ई एम (प्रतिशत)– 71

**कारी देवेन्द्र–**

एक मध्यम आकार का दोहरे प्रयोजन वाला पक्षी

कुषल आहार रूपांतरण– आहार लागत से ज्यादा उच्च सकारात्मक आय

अन्य स्टष्क की तुलना में उत्कृश्ट– निम्न लाइंग हाउस मृत्युदर

8 सप्ताह में षरीर वनज– 1700–1800 ग्राम

यौन परिपक्वता पर आयु– 155–160 दिन

अंडे का वार्शिक उत्पादन– 190–200

**कारीब्रो–धनराजा (बहु–रंगीय)–**

- दिवस होने पर वजन – 46 ग्राम
- 6 सप्ताह में वजन – 1600 से 1650 ग्राम
- 7 सप्ताह में वजन – 2000 से 2150 ग्राम
- ड्रेसिंग प्रतिशतः 73 प्रतिशत
- सहनीय प्रतिशत – 97–98 प्रतिशत
- 6 सप्ताह में आहार रूपांतरण अनुपातः 1.90 से 2.10

**मुर्गियों का चयन**

ग्रामीण परिवेश में पशुपालक मुर्गियों को एक से डेढ़ किलो के वजन होने पर कुछ को बेचते हैं, कुछ को खाने एवं मेहमानों को खिलाने, एवं शेष को चूजे उत्पन्न करने के लिए (प्रजनन के लिए) उपयोग करते हैं। प्रायः यह देखा गया है कि पशुपालक किन मुर्गियों को प्रजनन के लिए उपयोग करेंगे एंव किन्हें बेचेंगे, का चयन ठीक से नहीं कर पाते है जिससे कई बार कुडुक मुर्गी या ज्यादा अंडे देने योग्य मुर्गियों के बेचा या खाया जाता है एवं अग्योय मुर्गी चूजे उत्पन्न करने के लिए रख ली जाती है। इसका प्रतिकूल असर मुर्गी पालन के व्यवसाय पर पड़ता है।

प्रजनन हेतु कितने मुर्गे या मुर्गियों को रखना है, निम्नलिखित बातों पर निर्भर करता है।

1. मुर्गी घर की क्षमता –कम जगहों में ज्यादा कुक्कुट रखने पर कई तरह की समस्याएं आ सकती हैं।
2. खाने के उपयोग अथवा बेचने की क्षमता ।
3. पशुपालक की कुक्कुट दाना पानी एवं देखभाल करने की क्षमता ।

उपरोक्त आधार पर पशुपालक को यह तय करना चाहिए कि वह कितनी मुर्गियों को बेचेंगे एवं कितनों को प्रजनन हेतु रखेंगे।

**प्रजनन हेतु मुर्गा – मुर्गियों का चयन**

1. तेजी से बढ़ने वाले, स्वस्थ मुर्गा –मुर्गी चयन योग्य हैं। ऐसे कुक्कुटों की मजबूत चोंच एवं छोटे तथा पैने नाखून होते हैं। चमकदार लाल कलगी स्वास्थ्य एवं चुस्त कुक्कुट की निशानी होती है।
2. जो मुर्गियाँ कम उम्र में अन्डोत्पादन प्रारंभ कर देती है, उन्हें एवं उनके चूजों को भविष्य में प्रजनन हेतु चयन करना चाहिए।
3. दो वर्ष से अधिक समय तक अंडे दे रही मुर्गियों को प्रजनन के लिए पुनः उपयोग नहीं करना चाहिए।
4. मुर्गियों के अंडे देने के स्थान के दोनों तरफ नुकीली हड्डी होती है। तीन ऊँगली बराबर फासला अधिक अच्छा माना जाता है।
5. उन मुर्गियों का चयन करें जिनक गुदा द्वार साफ, नर्म एवं बड़े हो।
6. कुछ मुर्गे अकेले इधर से और उधर भटकते हैं। प्रजनन हेतु उन मुर्गियों का चयन करना चाहिए, जो प्रजनन योग्य मुर्गियों के पीछे दौड़ती है।
7. चयनित प्रजनन योग्य मुर्गों को एक वर्ष के भीतर बदल देना चाहिए। पशुपालक ऐसे नर कुक्कुट को आपस में बदल सकते हैं।

**अंडा सेने वाली मुर्गी की देखभाल**

देशी मुर्गी एक अच्छी माँ होने के कारण हमेशा अपने अंडे और चूजों को समुचित देखभाल करती है। कुडुक मुर्गी अण्डों या नवजात चूजों के ऊपर पंखों को फैलाकर बैठकर उन्हें शरीर के तापमान से गर्म रखती है। यह देखा गया है कि कुडुक मुर्गी की देखभाल ग्रामीण पशुपालक नहीं का पाते हैं। मुर्गी को कहीं भी बैठना पड़ता है एवं इसके कुछ अंडे

खराब होने के साथ–साथ जूं किलनी आदि से भी वह परेशान रहती है। निम्नलिखित बातों पर ध्यान देने से अण्डों की संख्या में बढ़ोत्तरी फलस्वरूप चूजों की संख्या बढ़ाई जा सकती है –

1. घोंसला/ले इंग नेस्ट बनाना चाहिए। यह एक बांस की टोकरी या लकड़ी के बक्से से बनाया जा सकता है। जो मुर्गी घर के कोनों में , किसी ऊँचे स्थान पर रखा गया हो। घर पर उपलब्ध पुरानी टोकरी, टूटी हंडी का भी उपयोग किया जाता है।
2. घोंसला/ले इंग नेस्ट पर सुखी, मुलायम, साफ पैरा का बिछौना बिछाया जा सकता है, जहाँ कुडुक मुर्गी बैठ सके।
3. इन मुर्गियों को उनके घोंसलों (लेइंग नेस्ट) को जूँ, किलनी, पिस्तू आदि बाह्य परजीवी से मुक्त रखना चाहिए (विधि इस पुस्तक में दी गयी है) ताकि बार–बार खुजली से परेशानी न हो व मुर्गी आराम से अंडे से सकें।
4. एक साफ–सुथरा आरामदायक घोंसला /नेस्ट बनाने से मुर्गियाँ कहीं भी अंडा नहीं देती है। इससे गंदे अण्डों से मुक्ति मिलती है तथा जंगली जानवर, पक्षी अंडे खा नहीं पाते हैं। साथ ही अण्डों के चटकने टूटने, अंडे खाने की आदत में कमी तथा अंडे खराब होने अक अंदेशा कम रहता है।
5. अंडा देने वाली मुर्गी को नियमित (प्रति तीन माह पश्चात) कृमिनाशक दवापान कराना चाहिए।
6. घोंसला/नेस्ट की जगह– मुर्गियों हमेशा एकांत स्थान पर ही अंडे देना पसंद करती है, इस कारण घोंसला/नेस्ट हेमशा ऐसे स्थान पर रखें जहाँ –
    - एकांत हो (घर के अंदर या मुर्गी कोठे के कोने में)
    - अँधेरा रहे (सीधे सूर्य की रौशनी न पड़ें )
    - हवादार हो।
    - जमीन से कम से कम 2 फीट/1 हाथ की ऊंचाई पर हों।
    - ठंडा व् सुखी जगह हो।
    - घोंसला/नेस्ट के नजदीक हर समय साफ, पीने का पानी उपलब्ध होना चाहिए तथा उपलब्धता के अनुसार दाना (कोंडा, पत्तीभाजी, मक्का आदि)

रखना चाहिए।ऐसा करने से मुर्गी ज्यादा से ज्यादा समय अंडा सेने के लिए बैठती है।

## मुर्गी चूजों की देखभाल

सामान्यतः चूजों के पालन में ग्रामीण पशुपालकों को सबसे ज्यादा कठिनाई आती है। चूजों में मृत्यु की आशंका सबसे अधिक होती है। चूजों को तेज गर्मी, ठण्ड, बरसात, कई प्रकार की बीमारियों, चील–कौवों से सुरक्षित रखना अति आवश्यक है। चूजों को प्रथम 3–4 सप्ताह की उम्र तक पालने में निम्नुसार सावधानियां बरतनी चाहिए।

1. दूरस्थ जगह से चूजे क्रय करके लाने की वजह से उनमें भूख एवं थकान होती है। उन्हें सबसे पहले किसी छाँव एवं शांत सी जगह में रखकर बारीक जोंदरा (मक्का) अथवा दलिया कागज (पुराने अखबार/समाचार पत्र) के बिछौने पर छिड़ककर देना चाहिए। चुजें जब कागज के ऊपर चलते हैं तो पंखे की खड़खड़ाहट से वे नीचे पड़े दाने को खोजकर खा पाते हैं। चूजों की थकान मिटाने के लिए पानी में थोड़ा गुड मिलाकर पिलाना चाहिए। इसमें उर्जा प्राप्त होती है।
2. कुक्कुट फार्म/हैचरी से चूजे आने से पहले मुर्गी घर को चुने या गोबर से लीपना चाहिए। सबसे अच्छा यह ही कि जिस मुर्गी घर में नये चूजे आए अन्य मुर्गियों का प्रवेश रोकना चाहिए। लेकिन जब घरेलू मुर्गी के चूजों को पालने की बात तो ऐसा करना उचित नहीं है।
3. चूजों को हमेशा खुले में नहीं रखना चाहिए। मनुष्यों के घर के अहाते में, मुर्गी घर में , या रात के समय एवं दोपहर के आंगन में बड़ी टोकनी की नीचे ढँक कर रखना चाहिए। टोकरी की चौड़ाई 27 इंच उंचाई 18 इंच एवं ऊपर एक 8 इंच चौड़ा छेद होना चाहिए।
4. मुर्गी घर एवं उपरोक्त अनुसार टोकनी में दाना–पानी की पर्याप्त व्यवस्था रखनी चाहिए।
5. मुर्गी घर में प्रथम दो सप्ताह तक इन एवं रात दोनों समय बल्ब जलाकर चूजों को ठण्ड से बचाना चाहिए। दो सप्ताह के बाद केवल रात में बल्ब जलाना ही पर्याप्त है। रात में बल्ब जलाने से एक लाभ और होता है कि रात में रौशनी होने के कारण वे

रात में भी दाना–पानी लेते रहते हैं। जिससे उनकी बढ़त तेजी से होती है। मुर्गी फार्मों के चूजों के जल्दी बढ़ाने के कई कारणों में से यह भी एक है।

6. बिजली न होने पर सिगड़ी अथवा तगाड़ी में कोयले के अंगार या लकड़ी के गुटके के अंगार रखकर उसे ईटों का घेरा बनवाकर चूजों को सुरक्षित एवं अनुकूल तापमान में रखा जा सकता है।
7. बल्ब कितनी ऊंचाई पर हो या सिगड़ी कितनी दूरी पर रहे इस बात को निम्नानुसार परखा जा सकता है। यदि चूजों बल्ब या सिगड़ी के बहुत पास–पास इकट्ठे हो रहें हो तो इसका अर्थ होगा कि बल्ब को थोड़ा नीचे, चूजों के पास रखा जाएँ या सिगड़ी में अंगार बढ़ाया जाएँ। यदि मुर्गी चूजे बल्ब या सिगड़ी से बहुत हट हरें तो इसका अर्थ होगा कि बल्ब को थोड़ा ऊपर, चूजों से दूर रखा जाए या सिगड़ी में अग्गार घटाया जाएं।
8. प्रथम सप्ताह की उम्र में चूजों को झुमरी रोग (रानीखेत) बचाव के लिए एफ 1 टीका लगाना चाहिए। एक माह की उम्र होने पर यह टीका पुनः लगाना उचित है। टीका लगाने की विधि विस्तार में इस पुस्तक में दी गई है।
9. प्रत्येक माह में 3 दिन एक चम्मच टैट्रासाइक्लीन पाउडर एक कसेला/एक बड़े गिलास पानी में घोलकर पिलाना चाहिए। यह मात्रा 15–20 चूजों के लिए पर्याप्त होती है। ऐसा करने से चूजों को सफेद दस्त एवं सर्दी जुकाम से बचाया जा सकता है।
10. इसी तरह माह में बार सभी चूजों को 3–3 बूंद पिपराजीन दवा, ड्रापर या सिंरिज की मदद से , पिलाने से चूजों के पेट में कृमि (पेट के कीड़े) नहीं होंगे जिससे उनकी बढ़त तेजी से हो सकती है।

## मुर्गियों में कृमिनाशक औषधियों का उपयोग

मुर्गियाँ, आहार एवं गंदे पानी के साथ जमीन की मिट्टी भी खा जाती अहि मिट्टी में कृमि के अंडे रहते हैं। आहार तथा गंदे पानी के साथ कृमि के अंडे मुर्गियों के शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। कृमि के अंडे मुर्गियों के शरीर में प्रवेश करने पर पेट में पहुँच कर मुर्गियों में नये कृमि पैदा करते हैं। मुर्गियों के पते में कृमि तैयार होने पर वह मुर्गियों की आँतों में

पहुंचकर आँतों से मुर्गियों का रक्त चुसना प्रारंभ कर देते हैं। इस तरह मुर्गी जो आहार खाती है वह कृमि के द्वारा चूस लिया जाता है। इस तरह कृमि के द्वारा आहार का एक बड़ा हिस्सा उपयोग में लेने के कारण मुर्गी अस्वस्थ हो जाती है तथा अंडे देना बंद कर देती है और कमजोरी के अकारण दूसरी बीमारियों से प्रभावित हो जाती है। अतः मुर्गियों में कृमियों का नियंत्रण एवं उपचार अत्यंत आवश्यक जिसके लिए निम्नलिखित कार्यवाही करना चाहिए –

1. मुर्गियों को प्रत्येक माह कृमिनाशक पिपराजिन औषधि देना चाहिए।
2. प्रत्येक माह में एक तिथि निश्चित कर लेना चाहिए।
3. मुर्गियों की संख्या के अनुसार औषधि की खुराक निर्धारित कर लेना चाहिए।
4. कृमिनाशक औषधि देने के कम से कम 4 घंटे पूर्व से मुर्गियों को दाना–पानी नहीं देना चाहिए जिससे मुर्गियों का पेट खाली रहे तथा वह प्यासी रहें।
5. कृमिनाशक औषधि हमेशा प्रातःकाल में ही देना चाहिए।
6. कृमिनाशक औषधि इतने पानी में ही देना चाहिए जितना मुर्गियाँ पूरी तरह पी जाएँ।
7. जिस दिन कृमिनाशक औषधियां मुर्गियों को दी जाएं, उसके दूसरे दिन प्रातः मुर्गी घर का बिछौना (लीटर) अच्छी तरह उल्ट–पुलट देना चाहिए, जिससे मुर्गियों के पेट से निकली कृमि लिटर में दबकर कर जाएं और कृमि पुनः न खा सकें।
8. कृमिनाशक औषधि देने के बाद मुर्गियों को पानी में विटामिन युक्त औषधि देना चाहिए।

इस तरह कृमियों पर नियंत्रण कर मुर्गियों से पूरा–पूरा लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

**मुर्गियों में बाह्य परजीवी नाशक औषधियों का उपयोग**

1 मुर्गियों में जूं, किलनी, पिस्सू आदि बाह्य परजीवियों का प्रकोप हो जाता है। बाह्य परजीवी मुर्गियों के त्वचा, पंख एवं पैरों पर रहकर उनके शरीर से खून चूसते हैं जिससे मुर्गियाँ कमजोर हो जाती हैं, साथ ही परजीवियों के प्रकोप से वे बेचौन रहती है एवं ठीक से भोजन नहीं चुग पाती हैं। मुर्गियाँ एक दूसरे को चोंच मारकर परजीवियों को चुघने की कोशिश करती है जिससे उन्हें चोट लगने का खतरा भी रहता है।

**2** बचाव – 5 भाग छाना हुआ राख में 1 भाग लिन्डेन या गैमेक्सीन पाउडर को एक कसेला में मिलाएं एवं एक–एक कर सभी मुर्गियों को उसका लेप लगाएं ।

## मुर्गी आवास की व्यवस्था

सामान्यतः एक मुर्गी वर्ष भर में 60–70 अंडें देती हैं। कुछ अण्डों में भ्रूण नहीं होता, लेकिन करीब 30–32 अण्डों से चूजे निकलते हैं। यद्यपि कोई व्यवस्थित अध्ययन नहीं किया गया है, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि इन 30–32 चूजों में से केवल 10–12 पक्षी मिलती है। अनुमान है कि इनमें से लगभग 20 से 40% बीमारी से, 20% समुचित देखभाल के अभाव तथा सर्दी–गर्मी के प्रकोप से मारे जाते हैं।

1. अच्छा मुर्गी आवास ठंड, बरसात, तेज धुप एवं जंगली जानवरों से बचाता है।
2. आवास के होने से मुर्गियों को दाना–अपने देना तथा दवा पिलाना आसान होता है।

## मुर्गीघर बनाते समय ध्यान रखने योग्य बातें

1. मुर्गीघर अपने आवास के साथ लगा हुआ एवं स्थानीय सामग्रियों से बनाया जा सकता है। जहाँ तक हो सके, घर को पूर्व–पश्चिम दिशा की ओर बनाएं।
2. यदि संभव तो मुर्गीघर को इक्कट्ठे हुए पानी, बाढ़ आदि से बचाने हेतु घर के फर्श को जमीन से करीब 1 फुट ऊँचा बनाएं ताकि बीट आदि नीचे इकट्ठा हो जाए जिसे बाद में खाद के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।
3. मुर्गीघर बहतु महंगा नहीं होना चाहिए, परन्तु घर की मजबूती, आराम तथा सुरक्षा का पूरा ध्यान रखना चाहिए।
4. लकड़ी अथवा बांस या मिट्टी का फर्श समतल करके बनाया जा सकता है।
5. घर का फर्श ऐसा होना चाहिए कि नमी तथा दरार पड़ने से बचा रहे, आसानी से साफ किया जा सके, मजबूत हो तथा चूहों इत्यादि का प्रवेश न होने पाए।
6. चूँकि सीतापुर में प्रचुर मात्रा में वर्षा होती है, घर की छत ऐसी होनी चाहिए कि बारिश का पानी बहकर निकल जाए। छत दीवार होनी चाहिए। गांवों में आसानी से उपलब्ध पैरा का इस्तेमाल छत बनाने के लिए किया जा सकता है। पैरा से ढकी छत में से पानी चुने की गुंजाइश नहीं रहती।
7. मुर्गी घर में आस–पास पेड़ लगाएं ताकि पेड़ों की छाया उस पर पड़ती रहे।
8. दीवारों का लगभग 75% हिस्से को बांस की जाली बनाकर ढकें। जालीदार दीवार में मोटा बोरा का पर्दा लगाएं जिसे सामान्यतः गोल घुमाकर ऊपर बांध कर रखें। आवश्यकतानुसार बारिश या तेज धुप पड़ने पर उसे खोल कर नीचे लटका दें ताकि

मुर्गियाँ पानी तह गर्मी से बची रहें। इन बोरोन को अधिक गर्मी के दिनों में पानी डालकर ठंडा रखें।

**विभिन्न श्रेणी की मुर्गियों हेतु जगह की आवश्यकता निम्नानुसार है –**

| **श्रेणी** | **आवश्यक जगह (वर्ग फीट प्रति मुर्गी)** |
|---|---|
| छोटे चूजे | 0.5 |
| 2–6 हफ्ते | 0.75 |
| 6 हफ्ते से अधिक | 1.00 |
| ब्रायलर | 1.00 |
| लेयर बड़े मुर्गी | 1.50–2.00 |

## आहार की व्यवस्था

अच्छा उत्पादन एवं अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए कुक्कुट पालकों को मुर्गियों के आहार पर ध्यान देना चाहिए। प्रायरू देखा गया है कि किसी विशेष मौसम में उत्पादित होने वाला एक विशेष प्रकार का अनाज ही मुर्गियों को खिलाया जाता है, जिससे पक्षियों को आवश्यक पोषक तत्व उचित मात्रा में प्राप्त नहीं होते है। अतः पक्षियों को वर्ष के दौरान पैदा होने वाले अनाजों को मिश्रित करके खिलाना चाहिए। यदि सम्भव हो तो सम्पूर्ण आहार के रूप में उन्हें प्रोटीन, खनिज लवण व विटामिन भी देना चाहिए। सम्पूर्ण आहार की मात्रा क्षेत्रीय उपलब्धता के आधार पर घटाई या बढ़ाई जा सकती है।

## मुर्गी आहार बनाने की विधि

| **खाद्य अवयव** | **मांस के लिए मुर्गी आहार** | **मुर्गियों को बेचने से 10 दिन पहले देने वाला आहार** | **चूजे बढ़ने के लिए आहार** | **चूजों को डेढ़ माह बाद वाला आहार** | **अंडा देने वाली मुर्गी का आहार** |
|---|---|---|---|---|---|
| मक्का | 44.25 | 44.10 | 32.00 | 27.00 | 30.80 |
| ज्वार | – | – | 11.00 | – | – |
| चावल की पॉलिस | 10.00 | 20.00 | 12.80 | 40.00 | 35.00 |
| मूंगफली की खल | 15.00 | 11.00 | 11.00 | 15.00 | – |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सूरजमुखी की खल | 15.00 | 11.00 | 15.00 | 5.00 | 11.50 |
| सरसों की खल | – | – | 5.00 | 5.00 | 11.50 |
| मछली का चूर्ण | 6.00 | 5.50 | 12.00 | 6.00 | 4.00 |
| मांस का चूर्ण | 6.00 | 5.50 | – | – | – |
| एल–लॉसीन | 0.15 | – | – | – | – |
| वसा | 2.00 | 1.25 | – | – | – |
| हड्डी का चूरा | 0.75 | 0.60 | 0.70 | 0.60 | 1.00 |
| चूना (खड़िया) | 0.50 | 0.70 | – | 0.80 | 5.60 |
| नमक | 0.25 | 0.25 | 0.40 | 0.40 | 0.05 |
| खनिज लवण | 0.10 | 0.10 | 0.10 | 0.10 | 0.10 |

**दाना –पानी के बर्तन**

1. मुर्गियों के दाने तथा पानी के बर्तनों हेतु समुचित जगह उपलब्ध करवाना अत्यंत आवश्यक है। सामान्यतः दाने–पानी बर्तनों हेतु इतनी जगह उपलब्ध होनी चाहिए कि कुल संख्या की आधी मुर्गियाँ एक समय में खा–पी सकें।
2. पानी के लिए थोड़े महंगे बर्तनों का उपयोग किया जाता है। ग्रामीण पशुपालक चाहें तो इन्हें खरीदकर उपयोग कर सकते हैं।
3. ग्रामीण मुर्गिपालक बांस के तने बर्तनों को कुक्कुट दाना पानी हेतु उपयोग कर सकते हैं। गाँव में बांस आसानी से तथा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध रहता है तथा इसका उपयोग भी आसान, सस्ता एवं कम मेहनत लगने वाला होता है।
4. तीन या चार फीट लंबे मोटे बांस को बीच से चीरा लगाकर दो हिस्सा कर लड़की के खूंटी पर रखा जाता है। इन बर्तनों को समय–समय पर साबुन तथा गुनगुने पानी से ढोने तथा सुखाने के बाद पुनः उपयोग करते हैं। दाने को व्यर्थ जाने से बचाने हेतु बर्तनों में दाना आधे से अधिक नहीं भरना चाहिए।
5. पानी के लिए बांस बर्तन के अतिरिक्त चित्र अनुसार घरेलू अनुपयोगी वस्तुओं का भी उपयोग किया जा सकता है।
6. सही जगह पर दाना–पानी के बर्तनों को रखकर मुर्गियों के लिए समुचित जगह उपलब्ध करना आवश्यक है। आवश्यकतानुसार मुर्गियों को घर के बाहर भी दाने–पानी की व्यवस्था की जा सकती है।

## देशी मुर्गी का आहार

मुर्गी की तुलना एक मशीन या फैक्ट्री से की जा सकती है, जो ग्रामीण परिवेश में उपलब्ध जैविक अनुपयोगी पदार्थों को पौष्टिक प्रोटीन (अंडा या मांस) में बदल देती है। देशी मुर्गी घर के आस–पास उपलब्ध चारे एवं कीड़े मकोड़ों को बड़ी चतुरता एवं चपलता से हासिल करती है। इस वजह से उनकी उर्जा खपत होती है। जिससे बढ़त कम होती है। यदि ग्रामीण पशुपालक सुबह एवं शाम को अल्प मात्रा में कुक्कट दाना नियमित रूप से दे तो उनकी मुर्गियों को 1 किलो शरीर भर पहुँचाने कें कम समय लगेगा एवं पशुपालक अधिक लाभाविंत होंगे। साथ ही उक्त कुक्कुट दाने में गाँव में उपलब्ध कम खर्चीले पौष्टिक सामग्री मिलान से कुक्कुट दाने का व्यय भी कम किया जा सकता है।

निम्नलिखित उपाय अपनाए जा सकते हैं –

1. पानी सबसे सस्ता एवं आहार का प्रमुख पदार्थ होता है। जीवित मुर्गी में 55–60% पानी ही होता है। दाने को नर्म करने व पचाने, हजम हुए भोजन को खून में ले जाने, शरीर के अंदर से खराब तत्वों के बाहर निकालने और शरीर का तापमान बनाये रखने के लिए मुर्गियों को पानी की आवश्यकता होती है। मुर्गी घर एवं आंगन के पास बांस बर्तनों या किसी भी साफ बर्तन में स्वच्छ, ताजे पानी को 24 घंटे सुगमता से उपलब्ध कराना अति आवश्यक है।
2. नियमित कृमिनाशक दवा पान तथा वाह्य परजीवी नाशक का उपयोग करना चाहिए।
3. मुर्गियों को नियमित हरा चारा एवं स्थानीय उपलब्ध आहार प्रदान करने से उनकी बढ़त केवल स्वयं द्वारा चरने से ज्यादा तेजी से हो सकती है जिससे ग्रामीण पशुपालक लाभाविंत हो सकते हैं।

उपरोक्त उपाय अपनाने से देशी मुर्गियों में रोग भी कम लगते हैं। स्वस्थ्य मुर्गी में भोजन का उपयोग रोगों से लड़ने के लिए न होकर अंडा व मांस बनने के लिए होने लगता है।

## कुक्कुट आहार के घटकों का संक्षिप्त विवरण एवं उनका महत्व–

| घटक | शरीर के भीतर कार्य | स्रोत |
|---|---|---|
| पानी | पाचन, शरीर के तापमान को बनाये रखना, शरीर से अनावश्यक तत्वों को निकालना | पानी, ताजा हरा चारा |
| कार्बोहाईड्रेडट | ऊष्मा, उर्जा तथा उत्पादकता के लिए | पीली मक्का, जौ, ज्वार, राईस |

| | | |
|---|---|---|
| | | पोलिस, कनकी |
| प्रोटीन | बढ़ोत्तरी, ऊतक निर्माण, अंडा एवं मांस उत्पादन | मूंगफली तिल व सोयाबीन की खली, दाल का छिलका, मछली का चुरा, हरा चारा (बरसीम) |
| खनिज | हड्डी निर्माण, अंडा उत्पादन, शरीर के सभी तंत्रों के लिए | हड्डी का चुरा, नमक, चुना, सीप, संगमरमर का चुरा |
| विटामिन | सम्पूर्ण स्वास्थ्य के लिए उत्पादन बेहतर अंडा व मांस उत्पादन के लिए | हरा चारा, पीली मक्का, मछली का चुरा, धुप |

**हरा चारा**

हरा चारा प्रोटीन, खनिज एवं विटामिन का अच्छा स्रोत है, जो हर आयु वर्ग की मुर्गियों को दिया जाना चाहिए। यह मुर्गियों के स्वास्थ्य व अंडा उत्पादन के लिए बहुत उपयोगी है। यदि पत्तेदार हरा चारा फूल आने से पहले काटकर मुर्गियों को दिया जाए तो उन्हें प्रोटीन, खनिज एवं विटामिन एवं लोबिया सर्वोत्तम माने जाते हैं। इसके अलावा गोभी, गाजर, मुली आदि के पत्ते, पालक जैसी सब्जियों के अनुपयोगी पत्तों के हिस्से भी दिए जा सकते हैं, मुर्गी आहार में एजोला भी दिया जा सकता है। हरे चारे को साफ पानी से धोकर एवं काटकर देना चाहिए। हरा चारा को निम्नलिखित मात्रा अनुसार खिलाना चाहिए।

मुर्गी – 30 से 50 ग्राम प्रतिदिन

चूजा –20 से 30 ग्राम प्रतिदिन

**मुर्गी आहार के लिए दीमकों का उपयोग**

- पुराने सूती कपड़े के टुकड़े बोरे का टुकड़ा
- गोबर के सूखे कंडे एवं थोड़ा कच्चा गोबर
- लकड़ी के सूखे टुकड़े
- दीमक युक्त, दीमक बाम्बी का टुकड़ा
- पर्याप्त नमी
- 2–3 दिनों तक मटके को उलटकर, आस–पास में पानी छिड़कर रखते हैं।

मटके को पलटकर, दीमक चूजों को खिलाया जा सकता है। इससे उन्हें अच्छा प्रोटीन मिलता है। जिससे अच्छी बढ़त होती है।

**प्रजनन व्यवस्था**

प्रायः ऐसा देखा जाता है, कि एक बार मुर्गी खरीदने के बाद एक झुंड में उन्हीं से बार–बार प्रजनन करवाया जाता है, जिससे इन ब्रीडिंग (अंतः प्रजनन) के दुष्प्रभाव सामने आते है। इससे अण्डों की संख्या निषेचन एवं प्रस्फुटन में कमी आती है तथा बच्चों की मृत्यु दर बढ़ती है। अतः इन्हें प्रतिवर्ष बदल देना चाहिए। इससे अंडा उत्पादन व प्रजनन क्षमता में वृद्धि के साथ–साथ चूजों की मृत्यु दर में कमी आती है।

| ब्रायलर | लेयर | देशी |
|---|---|---|
| अधिक शारीरिक वृद्धि दर | अधिक अन्डोत्पादन एवं कम शारीरिक वृद्धि दर। | कम अन्डोत्पादन एवं कम शारीरिक वृद्धि दर। |
| 36 से 38 दिन में लगभग 2 किलो वजन | लगभग 300 से 320 अंडे प्रति मुर्गी प्रति वर्ष | लगभग 60 से 70 अंडे प्रतिवर्ष तथा 6– 8 माह में 2 किलो शरीर भार |
| ग्रामीण परिवेश में रोग प्रतिरोधक क्षमता कम | ग्रामीण परिवेश में रोग प्रतिरोधक क्षमता कम | ग्रामीण परिवेश में रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक |
| सफेद रंग के होते हैं। | सफेद एवं रंगीन दोनों पाए जाते हैं। | अधिकतर रंगीन होते हैं। |
| 24 घंटे मुर्गी घर में रखकर दाना–पानी वहीं उपलब्ध कराया जाता है। | 24 घंटे मुर्गी घर में रखकर दाना–पानी वहीं उपलब्ध कराया जाता है। | आंगन एवं घर के आस–पास खुले स्थान में पाली जाती है। अपना दाना–पानी स्वयं जुटाती है। |
| बाजार कीमत रु. 80 से 90 प्रति किलो जीवित वजन | बाजार कीमत रु. 5 से 6 प्रति अंडा एवं कम अन्डोत्पादन उपरान्त मुर्गी कीमत रु. 55 से 65 प्रति नग। | बाजार कीमत रु. 10 से 12 प्रति अंडा एवं 200 से 250 प्रति किलो जीवित वजन। |
| मांस के लिए पाला जाता है। | अण्डों के लिए पाला जाता है। | मांस एवं अण्डों के लिए पाला जाता है। अधिक पौष्टिक एवं स्वादिष्ट मांस की मान्यता। |

## मुर्गियों की सुरक्षा के आवश्यक उपाय –

बीमारियों से बचाव के सम्बन्ध में जानकारी रखना प्रत्येक मुर्गीपालक के लिए आवश्यक हो जाता है।

1. मुर्गियों को तेज हवा, आंधी, तूफान से बचाना चाहिए।
2. मुर्गियों के आवास का द्वार पूर्व या दक्षिण पूर्व की ओर होना अधिक ठीक रहता है जिससे तेज चलने वाली पिछवा हवा सीधी आवास में न आ सके।

3. आवास के सामने छायादार वृक्ष लगवा देने चाहिए ताकि बाहर निकलने पर मुर्गियों को छाया मिल सके।
4. मुर्गियों का बचाव हिंसक प्राणी कुत्ते, गीदड़, बिलाव, चील आदि से करना चाहिए।
5. आवास का आकार बड़ा होना चाहिए ताकि उसमें पर्याप्त शुद्ध हवा पहुंच सके और सीलन न रहे।
6. मुर्गियां समय पर चारा चुग सके इसलिए बड़े–बड़े टोकरे बनाकर रख लेने चाहिए।
7. कुछ व्याधियां मुर्गियों में बड़े वर्ग से फैलकर भंयकर प्रभाव दिखाती है जिसमें वे बहुत बड़ी संख्या में मर जाती है। अतः बीमार मुर्गियों को अलग कर देना चाहिए। उनमें वैक्सीन का टीका लगवा देना चाहिए।
8. मुर्गी फार्म की मिट्टी समय–समय पर बदलते रहना चाहिए और जिस स्थान पर रोगी कीटाणुओं की संभावना हो वहां से मुर्गियों को हटा देना चाहिए।
9. एक मुर्गी फार्म से दूसरे मुर्गी फार्म में दूरी रहनी चाहिए।
10. मुर्गियां खरीदते समय उनका उचित डॉक्टरी परीक्षण करा लेना चाहिए तथा नई मुर्गियों को कुछ दिनों तक अलग रखकर या निश्चय कर लेना चाहिए कि वह किसी रोग से ग्रस्त तो नहीं है। पूर्ण सावधानी बरतने पर भी कुछ रोग हो ही जाए तो रोगानुसार चिकित्सा करें व पशुचिकित्सक की सलाह लें ।

**रोगों से बचाव**

मुर्गियों को विभिन्न प्रकार से संक्रामक रोगों से बचाने के लिए कुक्कुट पालकों को मुर्गियों में टीकाकरण अवश्य करा देना चाहिए। जहां तक संभव हो एक गाँव या क्षेत्र के सभी कुक्कुट पालाकों को एक साथ टीकाकरण करवाने का प्रबंध करना चाहिए, इससे टीकाकरण की लागत में कमी आती है। बर्ड फ्लू जैसी भयानक बीमारियों से बचने के लिए मुर्गियों को बाहरी पक्षियों, पशुओं के संपर्क से बचाना चाहिए। यदि कोई मुर्गी बीमार होकर मर गई हो तो उसे स्वस्थ पक्षियों से तुरंत अलग कर देना तथा निकटस्थ पशु चिकित्सक से सम्पर्क कर मरी मुर्गी का पोस्टमार्टम करवाकर मृत्यु के सम्भावित कारणों का पता लगाना चाहिए तथा एनी मुर्गियों को बचाने के लिए उपयुक्त कदम उठाना चाहिए। इस प्रकार आधुनिक तकनीक अपनाकर पारम्परिक ढंग से मुर्गी पालन कर ग्रामीण परिवारों में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के साथ–साथ अतिरिक्त आय अर्जित की जा सकती है।

## मुर्गियों का टीकाकरण

| बीमारी | उम्र | टीकाकरण का तरीका |
|---|---|---|
| मारेक्स रोग | 1 दिन | नाक / आँख में ड्राप डालकर |
| रानीखेत, एफ स्ट्रेन | 1 सप्ताह | नाक / आँख में ड्राप डालकर |
| गम्बोरो | 2–3 सप्ताह | आँख द्वारा /पीने के पानी में डालकर |
| संक्रमित ब्रोकाइटिस | 4 सप्ताह | आँख द्वारा /पीने के पानी में डालकर |
| रानीखेत, एफ स्ट्रेन बूस्टर डोज | 5–6 सप्ताह | आँख द्वारा /पीने के पानी में डालकर |
| रानीखेत, आर2बी स्ट्रेन | 8–9 | चमडी में |
| मुर्गी पाक्स | 10–11सप्ताह | खरोंच कर |
| संक्रमित ब्रोकाइटिस – बूस्टर डोज | 14–16 सप्ताह | आँख द्वारा /पीने के पानी में डालकर |
| मुर्गी पाक्स– बूस्टर डोज | 16–17सप्ताह | खरोंच कर |
| रानीखेत, आर2बी स्ट्रेन – बूस्टर डोज | 18सप्ताह | चमडी में |
| गम्बोरो– बूस्टर डोज | 18–20 सप्ताह | पीने के पानी में डालकर |

# मुर्गी रोग एवं टीकाकरण

मुर्गियों में जीवाणु द्वारा उत्पन्न रोगों से 25–100 प्रतिशत तक मृत्यु दर होने की संभावना रहती है। आर्थिक दृष्टिकोण से मुर्गियों के रोगी ग्रसित हो जाने पर इलाज लाभकारी नहीं होता। कुछ बीमारियों से बचाव के लिए पहले से प्रयास करना आवश्यक होता है। अतः मुर्गी पालकों को अपनी मुर्गियों में होने वाले रोगों के लक्षण, रोकथाम, टीकाकरण तथा इलाज के संबंध में जानकारी होना चाहिए। घरेलू मुर्गी पालन में आमतौर पर मुर्गियों को निम्नाकिंत बीमारियों से पहचाना चाहिए तथा नियमित टीकाकरण करना चाहिए –

## प्रमुख बीमारियों के लक्षण –

| बीमारी | प्रमुख लक्षण | बचाव |
|---|---|---|
| झुमरी/रानी खेत | ऊँघना एवं दस्त<br>नाक से पानी आना<br>पैर एवं पंख में लकवा मारना सांस लेने में कठिनाई<br>बहुत सारी मुर्गी के साथ प्रभावित | बीमारी से पहले नियमित टीकाकरण आवास एवं बर्तनों की साफ सफाई बीमार मुर्गी एवं ठण्ड से बचाव, बीमार मुर्गी से दूर रखना |

| | | |
|---|---|---|
| चेचक/पॉक्स | कलगी, चेहरा एवं आँखों में फोड़े<br>फोड़े फुटकर घाव बहुत सारी मुर्गी एक साथ प्रभावित | मुर्गी से दूर रखना |
| सफेद दस्त | सफेद दस्त<br>ऊँघना<br>खुनी दस्त<br>कमजोरी | आवास एवं बर्तनों की साफ सफाई लक्षण दिखने पर तुरंत उपचार |
| खुनी दस्त | ऊँघना<br>खुनी दस्त<br>कमजोरी | आवास एवं बर्तनों की साफ सफाई लक्षण दिखने पर तुरंत उपचार |
| कृमि | वजन न बढ़ना<br>कमजोरी<br>अन्य बीमारी से प्राकृतिक बचाव शक्ति कम होना | प्रति तीन माह कृमि नाशक दवा पिलाना |
| सर्दी | ऊँघना<br>नाक से पानी आना<br>साँस लेने में कठिनाई<br>साँस लेने में घरघराहट | बीमारी मुर्गी एवं ठण्ड से बचाव लक्षण दिखने पर तुरंत उपचार |

## झुमरी रोग/रानीखेत रोग

यह देशी मुर्गियों का एक प्रमुख रोग है जिससे सबसे ज्यादा नुकसान मुर्गी पालक को होता है। यह एक विषाणु जनित रोग जिसका इलाज संभव नहीं है, अर्थात टीकाकरण ही एकमात्र बचने का उपाय है। रोग के विषाणु अक्सर दूषित जल व दाने तथा बीमार व स्वस्थ्य मुर्गियों के एक दुसरे के संपर्क में आने से फैलता है। इसलिये यह आवश्यक है कि मुर्गियों में रानीखेत का टीकाकरण नियमित रूप से किया जाये।

झुमरी बीमारी के मुख्य लक्षण

1. सभी मुर्गियों का बीमार होना तथा प्रायः 90 प्रतिशत से ज्यादा बीमार मुर्गियों की मृत्यु होना ।
2. सुस्त होना एवं खाना–पीना बंद करना।
3. सिर में सुजन व मुंह से लार गिरना।
4. आधा मुंह खोलकर लंबी–लंबी साँस लेना एवं साँस लेने में आवाज आना।
5. मुर्गियों का ऊँघना–झुमना ।
6. हरा/पीला दस्त होना।
7. लकवा मारना–पंख लटक जाना/पांव का अकड़ जाना
8. गर्दन टेड़ी होना।

**रानीखेत बीमारी फैलने पर क्या करें–**

रोग नियंत्रण की दृष्टि से पुरे गाँव/पारा को एक खुला देशी मुर्गी फार्म माना जा सकता है। किन्तु ऐसे देशी मुर्गी फार्म में कुछ विशेष ध्यान देने योग्य बातें है–

1. सर्वप्रथम स्वयं गाँव में जाकर देखें। अक्सर यह देखा गया है कि सफेद दस्त, कोराईजा बीमारी से मृत्यु को भी ग्रामीण पालक झुमरी रोग बता देते है।
2. झुमरी रोग पाए जाने की स्थिति में सभी स्वास्थ्य दिखती मुर्गियों में तुरंत टीकाकरण करना चाहिए।
3. बड़ी मुर्गियों में आर बी टीका लगाना चाहिए।
4. चूजों एवं छोटी मुर्गियों में एफ 1 टीका लगाना चाहिए।
5. सभी बीमार मुर्गियों को अलग रखने की सलाह देना चाहिए। ऐसे मुर्गियों को ट्रैट्रासाइक्लिन पाउडर पानी में मिलाकर पिलाया जा सकता है।
6. टीकाकरण के दौरान सभी मुर्गी पालकों को नियमित टीकाकरण (आर 2 बी टीका) साल में तीन बार करने की सलाह देना चाहिए।

**माता रोग/चेचक/फाउल पाक्स**

देशी मुर्गियों में चेचक/माता रोग एक आम व् दूसरी प्रमुख बीमारी है। इससे ग्रस्त प्रायः सभी छोटे चूजों की मृत्यु हो जाती है। बड़ी मुर्गियों की मृत्यु तो कम होती है पर स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। चेचक/माता रोग एक विषय जनित रोग होने के कारण इसके इलाज नहीं हो सकता है। अर्थात टीकाकरण ही एकमात्र बचने का उपाय है। चूँकि बीमारी पूरे साल गाँव/पारा की मुर्गियों में बड़े छोटे/बड़े रूप में होती रहती है, इस कारण बीमारी से बचने के लिए नियमित टीकाकरण (साल में दो बार) करना आवश्यक है।

**लक्षण**

**चेचक/माता रोग के तीन किस्में/रूप हैं–**

**त्वचा का चेचक–**

यह किस्म/ रूप सबसे अधिक देखने को मिलते है। छोटे–छोटे मटमैले छालों की तरह दाने कलगी तथा पंख रहते हिस्सों का उभर आते हैं। व् जल्दी से बढ़ जाते हैं और पपड़ी बन जाते है। फिर आपस में जुड़ जाते हैं व चेचक का रूप में ले लेते हैं,

फैलते–फैलते नाक पर, आँख पर और चोंच के दानों किनारों पर भी आ जाते हैं। यह चेचक 3 या 4 सप्ताह भोजन चरने में कठिनाई के कारण मृत्यु हो जाती है।

**गले का चेचक**

चेचक की यह किस्म सबसे ज्यादा नुकसानदेह है। इससे छोटे चूजों व बड़ी मुर्गियाँ की समान रूप से मृत्यु होती है। गले वाली चेचक में मुंह व गले के अंदर उभरे हुए छाले हो जाते है, जो बड़े होकर और गहरे हो जाता हैं। जिसके कारण मुर्गियाँ अच्छी तरह खा नहीं पाती व उनकी हालत जल्दी बिगड़ जाती है व मृत्यु हो जाता है।

**आँखों का चेचक–**

इस किस्म में बीमारी का प्रभाव आँखों में दीखता है। आँखों में पानी आने लगता है जो बाद में गाढ़ा हो जाता है, आखें पीप से भर जाती है और फल आती है। पलक चिपक जाती हैं और मुर्गी देख नहीं पाती। फलस्वरूप भूख से मृत्यु हो जाती है। यह जानना आवश्यक है कि एक ही समय में अलग–अलग मुर्गियों में तीनों किस्में देखी जा सकती है।

छालों या फफोलों पर कोई एक अच्छा एंटीबायोटिक मलहम लगाकर रोग की तीव्रता को कम किया जा सकता है, लेकिन इस बीमारी का कोई सीधा इलाज संभव नहीं है। रोग न होने से पहले नियमित टीकाकरण ही बचाव का एकमात्र सही एवं सस्ता उपाय है।

**मुर्गियों की अन्य बीमारियाँ एवं उपचार**

मुर्गियों में बहुत सारी बीमारियाँ होती है, परन्तु अधिकतर बीमारियाँ बड़े कुक्कुट फार्मों में देखने को मिलती है। ग्रामीण अंचल की घरेलू देशी मुर्गियाँ में वातावरण एवं बीमारियाँ से बचाव हेतु अंदरूनी रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक होती है जिसकी वजह से ये काफी बीमारियों से बच जाती है। लेकिन घरेलू मुर्गियों में पिछले अध्याय में वर्णित झुमरी एवं चेचक प्रमुख बीमारियाँ मानी जाती है। इसके अतिरिक्त घरेलू देशी मुर्गियों में निम्नलिखित बीमारियाँ पायी जाती है।

1. सफेद दस्त
2. खुनी पेचिस
3. सर्दी जुकाम

## सफेद दस्त/बैसिलरी व्हाईट डायरिया

यह रोग मुख्यतः चूजों में होता है जिससे काफी संख्या में चूजों की मृत्यु होती है। बाद में यह बड़ी मुर्गियों में भी फैलता है। रोग से ग्रस्त मुरियों के अण्डों में भ्रूण मर जाते हैं। रोगी मुर्गियों की बीट चुने जैसी सफेद होती है तथा मल विसर्जन के समय दर्द होता है, कुक्ष पक्षी अंधे या लंगड़े भी हो जाते हैं। चूजे एवं मुर्गियों का पिछला भाग दस्त के कारण चिपक जाता है।

## उपचार–

### ट्रैट्रासाइक्लिन पाउडर दवा–

यह दवा किसी भी पशु दवा दूकान में उपलब्ध होती है। 20 चूजे अथवा 5 बड़ी मुर्गियों के लिए कप पानी (50 एम्. एल) में 2 चुटकी (2 ग्राम) दवा घोलें एवं ड्रापर या सिरिंज द्वारा बीमार चूजों को दो–दो बूंद एवं बड़ी मुर्गियों के पांच–पांच बूंद तीन दिनों तक लगातार पिलाने से बीमार दूर की जा सकती है। पीने के पानी में घोलकर भी दवा मिलाकर मुर्गी घर में रखे पानी बर्तन में डाल दें एवं प्रभावित चूजे या मूर्गियों का अपनी इच्छा अनुसार इस पानी को पीने दें। ऐसा तीन दिनों तक करें।

### रोकथाम

1. बिछौना, मुर्गीघर एवं उसके आसपास की जगह की साफ–सफाई का पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए।

2. ट्रैट्रासाइक्लिन पाउडर दवा/ लिक्सेन पाउडर, युरासेल पाउडर/लारासोल पाउडर–ऊपर बताई गई दवा को आधी मात्रा में देने पर यह रोकथाम करने में सहायक है।

### खुनी पेचिश/खुनी दस्त/कॉक्सीडियोसिस–

यह रोग मुख्यतः पक्षी रखने के स्थान पर नमी के कारण होता है। सबसे प्रमुख लक्षण खुनी दस्त होता है। प्रभावित चूजे खाना नहीं खाते हैं, पंखों को नीचे झुकाकर रखते हैं। कलगी का रंग भूरा होने के साथ–साथ, अन्डोत्पादन कम हो जाता है। इस रोग से चूजे काफी कमजोर हो जाते हैं एवं आँख मूंदकर बैठ जाते हैं। इस बीमारी से काफी बड़ी संख्या में पक्षियों की मृत्यु हो जाती है। यह रोग कम आयु के पक्षियों को करीब दो से तीन सप्ताह की आयु में लगता है जो बाद में बड़ी मुर्गियों में भी फैलता है।

**उपचार**

कॉक्सीडिया रोधक दवाएं जसी एम्प्रोलियम, सल्फाक्वीनॉक्सेलिन, सल्फामीराजीन आदि आसानी से उपलब्ध है। दवा के ऊपर दर्शायी गयी मात्रा के अनुसार दवा को दाने अथवा पानी में मिलाकर सात दिनों तक प्रभावित मुरियों को देना चाहिए। साथ ही विटामिन एवं खनिज मिश्रण को पानी में मिलाकर देने से भी रोग को नियंत्रित किया जा सकता है।

**रोकथाम–**

1. इस रोग की रोकथाम के लिए मुर्गियों का बिछावन या मुर्गी घर फर्श सुखा तथा साफ रखना चाहिए। बिछावन गीला होने पर चुना मिलकर बिछावन को पलट देना चाहिए।
2. निम्नलिखित औषधियों में से किसी एक को दाना में मिलाकर खिलावें या पीने के पानी में मिलाकर। दवा युक्त पानी के साथ सादा पानी न दें। रोकथाम के लिए 2–3 माह तक या जब तक आवश्यकता हो दवा देना चाहिए।

**मुर्गियों में सर्दी–जुकाम**

ठंड के समय, बारिश में भींगने पर पर या खुले में बाहर रहने पर मुर्गियों को, खासकर चूजों को या बीमारी हो जाती है। मुर्गियों का सुस्त रहना, कलगी में नीलापन, दाना–पानी कम खाना एवं चोंच से पतला स्राव का बहना प्रमुख लक्षण है। चूजे एवं मुर्गियाँ पास–पास आकर झुण्ड बना लेते है इससे यह बीमारी और भी फैलती है।

**उपचार**

ट्रैट्रासाइक्लिन की (टैबलेट सुबह षाम खिलावें) सल्फाडिमीडिन (16 प्रतिषत घोल) 10 मिली. 1 लीटर पानी में मिलाकर पिलावें।

**रोकथाम –**

1. मुर्गियों को रात में खुला नहीं छोड़ना चाहिए। सस्ता एवं सुलभ मुर्गी घर बनाकर ही मुर्गी पालना चाहिए। अन्य लाभ के अतिरिक्त इस बीमारी की रोकथाम भी इससे की जा सकती है।
2. मुर्गियों के ठंड से बचाना चाहिए। आवश्यकता होने पर 60 या 100 वॉट का बल्ब मुर्गी घर में जलाना चाहिए। इससे कमरा गर्म रहता है।
3. उपरोक्त वर्णित ट्रैट्रासाइक्लिन दवा को इस बीमारी की रोकथाम या तीव्रता का कम करने में उपयोग किया जा सकता है। उक्त दवा मुर्गियों को हर 3 माह में एक बार 3 दिन तक लगातार पिलाना चाहिए।

4. चूजों का रखरखाव शीर्ष में वर्णित तरीके से बल्ब या बिजली हीटर या गैस हीटर का उपयोग करने से भी इस रोग से बचा जा सकता है।

मुर्गियों द्वारा अंडों को फोड़ना –

मुर्गियों में पाया जाने वाला यह एक महत्वपूर्ण दोष होता है। इसमें मुर्गियां या तो अपने अंडों को अथवा दूसरी मुर्गियों के अंडों को तोड़ती रहती हैं। कैल्शियम की कमी होने पर मुर्गियां इस प्रकार के दोष से ग्रसित होती हैं।

**उपचार**

इससे प्रभावित मुर्गियों को कैल्शियम की आधी से एक टिकिया सुबह–शाम देनी चाहिए। प्रभावित मुर्गियों को ऑस्टोकैल्शियम सीरप की आधी से एक चाय चम्मच मात्रा को दिन में 2–3 बार देना चाहिए। मुर्गियों को दाने के साथ – साथ कैल्शियमयुक्त खनिज मिश्रण जैसे चिलेटेड ऐग्रीमिन फोर्ट, आयुमिन वी, वेस्टमिन गोल्ड इत्यादि में से किसी एक की 25–30 ग्राम मात्रा प्रति 10 कि.ग्रा. दाने में मिलाकर देते रहना चाहिए। प्रभावित मुर्गियों को दाने में सीतुहा, सीप इत्यादि के चूर्ण को देने से लाभ मिलता है। मुर्गियों की इस बुरी आदत को छुड़ाने के लिए प्लास्टिक या चीनी मिट्टी से बने अंडे को मुर्गियों के सामने रखना चाहिए और चोंच मारने पर चोट लगने के कारण मुर्गियां इस आदत को धीरे–धीरे छोड़ देंगी।

**कच्चे अंडों का निकलना**

खनिज तत्व कैल्शियम की कमी से प्रभावित मुर्गियां पिलपिले एवं मुलायम अंडे देने लगती हैं। अंडों का छिलका पतला एवं लचीला हो जाता है और उनका कोई मूल्य नहीं मिलता है। इसके कारण मुर्गीपालक को आर्थिक हानि का सामना करना पड़ता है।

**रोग का कारण**

यह मुख्य रूप से अंडे देने वाले मुर्गियों में कैल्शियम की कमी के कारण होता है। इसकी कमी के कारण अंडों का ऊपरी भाग पतला होकर पिलपिला हो जाता है।

**रोग की चिकित्सा**

प्रभावित मुर्गियों को कैल्शियम की 1/2–1 टिकिया दिन में दो बार देनी चाहिए। ओस्टोकैल्शियम सीरप की 1/2–1 चाय चम्मच की मात्रा दिन में दो बार देनी चाहिए। मुर्गियों के दाने में कैल्शियमयुक्त खनिज मिश्रण की 25–30 ग्राम मात्रा प्रति 10 कि.ग्रा. दाने में मिलाकर देते रहना चाहिए।

## मुर्गियों के द्वारा पंख का नोचना

यह मुर्गियों में होने वाली एक बुरी आदत है। इससे ग्रसित मुर्गियां कभी–कभी दूसरी मुर्गियों के पंखों को, घुटने को, गुदा को तथा अन्य दूसरे भागों को नोचने का काम करती हैं, जिसके कारण मुर्गियां घायल हो जाती हैं। इससे ग्रसित मुर्गियां साथ रहने वाली अन्य दूसरी मुर्गियों को इससे प्रभावित कर देती हैं।

## कारण

इसका प्रमुख कारण प्रबंधन में अव्यवस्था है। यह मुख्य रूप से मुर्गियों की अधिक संख्या होने और खाने एवं पानी पीने के लिए बर्तनों की उचित व्यवस्था न होने पर होती है। मुर्गियों को उचित राशन नहीं मिलने तथा पोषक तत्वों की कमी होने या प्रकाश की उचित व्यवस्था न होने पर मुर्गियों में यह बुरी आदत आ जाती है।

## उपचार

सबसे पहले प्रभावित मुर्गियों को अलग रखना चाहिए तथा नमक खिलाना चाहिए। प्रभावित मुर्गियों को सोडियम क्लोराइड की आधी टिकिया सुबह–शाम देने से यह आदत छूट जाती है। मुर्गियों के राशन में नमक की मात्रा बढ़ा देनी चाहिए। प्रभावित मुर्गियों की चोंच को काटकर थोड़ा मोटा कर देना चाहिए। मुर्गियों को इससे बचाए रखने के लिए उचित पोषण एवं प्रबंध आवश्यक

## मुर्गियों में टेढ़ी टांगें या पेरोसिस का होना

यह मुर्गियों में विटामिन बी–12, या  मैंगनीज की कमी से होने वाली बीमारी होती है । यह रोग मुख्य रूप से तीन से चार महीने की उम्र की मुर्गियों में होता है। रोग से प्रभावित मुर्गियों की टांगें टेढ़ी हो जाती हैं, जिसके कारण वे लंगड़ाने लगती हैं। पैरों में सूजन आ जाती है तथा चलने में दर्द होता है।

## उपचार

प्रभावित मुर्गियों को विटामिन–ए, विटामिन बी–12 व विटामिन बी काम्पलेक्स दाने के साथ मिलाकर देनी चाहिए।

## मुर्गियों में विटामिन की कमी से होने वाले रोग

मुर्गियों में विटामिन्स की कमी के कारण होने वाले प्रमुख रोग निम्नलिखित हैंः –

## विटामिन 'ए' की कमी से होने वाले रोग

विटामिन 'ए' की कमी के कारण मुर्गियों को रतौंधी रोग हो जाता है। प्रभावित मुर्गियों को दिखायी नहीं पड़ता है। आंखों में माड़ा पड़ जाता है और आंखें सफेद हो जाती हैं। इस विटामिन की कमी के कारण मुर्गियां सर्दी तथा जुकाम से ग्रसित हो जाती है। आंख तथा नाक से पानी बहता रहता है तथा आंख एवं नाक में सूजन आने लगती है । विटामिन 'ए' की कमी से ग्रसित छोटी मुर्गियों को चक्कर आने लगते हैं तथा ये गिर पड़ती हैं। इससे ग्रसित मुर्गियों को भूख कम लगती है। प्रभावित मुर्गियों का शारीरिक विकास रुक जाता है। विटामिन 'ए' की कमी से ग्रसित अंडे देने वाली मुर्गियों के अंडा उत्पादन में रोग के गिरावट आ जाती है। मुर्गियों के गुर्दा एवं मूत्र नलिकाओं में यूरिक एसिड जमा हो जाता है । विटामिन 'ए' की अधिक कमी होने पर मुर्गियों की मृत्यु हो जाती है।

## उपचार

- इसकी कमी से प्रभावित मुर्गियों के दाने में बिटामिन ए व डी मिलाकर देना चाहिए अथवा बिटाब्लेण्ड लिक्विड पानी में मिलाकर देना चाहिए।
- विटामिन 'ए' की अत्याधिक कमी से प्रभावित मुर्गियों को विटामिन 'ए' की सूई की 1/2 से 1 लाख युनिट मांस में सप्ताह में दो बार लगानी चाहिए।
- इसकी कमी से प्रभावित मर्गियों को हरी साग–सब्जियां अधिक मात्रा में देनी चाहिए। साथ ही साथ मछली के तेल की 2–4 बूंद सुबह–शाम पिलाते रहना चाहिए।
- विटामिक्स–एस की 25 ग्राम मात्रा को प्रति 10 कि.ग्रा. दाने में मिलाकर देते रहना चाहिए।
- विटामिन 'ए' की कमी से ग्रसित मुर्गियों को विटामिन 'ए' की 10 मि.ली. मात्रा, अंडे देने वाली मुर्गियों को 10 मि.ली. मात्रा ग्रोवर को तथा 2 मि.ली. मात्रा, चूजों को पीने के पानी के साथ 10 दिनों तक देनी चाहिए।

विटामिन बी, या राइबोफ्लेविन की कमी से होने वाले रोग

## रोग के लक्षण

विटामिन बी, की कमी से ग्रसित मुर्गियों के पंख झड़ने लगते हैं। भूख कम हो जाती है, मुर्गियां अत्यधिक कमजोर हो जाती हैं। प्रभावित मुर्गियों की त्वचा खुरदरी हो जाती है तथा पैरों के जोड़ों में सूजन आ जाती है। राइबोफ्लेविन की कमी से प्रभावित मुर्गियों के पंजे टेढ़े हो जाते हैं, जिसे 'कर्ल टो' के नाम से जाना जाता है। पैरों में लकवा हो जाता है, जिसके कारण पैर टेढ़े हो जाते हैं तथा पैरालिसिस से ग्रसित हो जाते हैं। इसकी कमी से प्रभावित चूजों की वृद्धि रुक जाती है। विटामिन बी2 की कमी लगातार बने रहने से मुर्गियां चलने–फिरने में असमर्थ हो जाती हैं। एक जगह पड़ी रहती हैं तथा अंत में भूख एवं पानी की कमी के कारण मुर्गियों की मृत्यु हो जाती है।

## रोग का उपचार

विटामिन बी2 की कमी से प्रभावित मुर्गियों को विटामिन बी–कॉम्प्लेक्स की मात्रा प्रत्येक मुर्गी को देनी चाहिए। इसकी कमी से ग्रसित मुर्गियों को विसोल–बी की 15–20 मि. ली. मात्रा प्रति 100 मुर्गियों को पानी के साथ देनी चाहिए।

## विटामिन डी की कमी से होने वाले रोग

विटामिन 'डी' की कमी होने पर मुर्गियों का विकास रुक जाता है। चूजों की वृद्धि दर में गिरावट आ जाती है। प्रभावित मुर्गियों के अंडों के छिलके पतले होने लगते हैं। अंडों के उत्पादन में भारी गिरावट आ जाती है। मुर्गियों की हड्डियां टेढ़ी हो जाती हैं।तथा छोटी रह जाती हैं। इसकी कमी से प्रभावित मुर्गियों के पंख बहुत देर से निकलते हैं। विटामिन–डी मुर्गियों के शरीर के विकास में सहायक है।

## उपचार

सामान्य रूप में विटामिन 'डी' धूप से मिलता है। अतः धूप का उचित प्रबंधकरना चाहिए। इसकी कमी से ग्रसित मुर्गियों को टी.एम. फोर्ट, विटामिक्स इत्यादि दवाइयां देने से लाभ मिलता है।

## विटामिन 'के' की कमी से होने वाले रोग

इसकी कमी से ग्रसित मुर्गियों में कट लगने पर खून का थक्का बनाने की शक्ति क्षीण हो जाती है, जिसके कारण खून बहता रहता है।

**उपचार**

प्रभावित मुर्गियों को गालो – के की एक ग्राम मात्रा 10 कि.ग्रा. दाने में मिलाकर देते रहना चाहिए।

**विटामिन 'ई' की कमी से होने वाले रोग या क्रेजी चिक रोग**

यह मुख्य रूप से 2–3 माह के चूजों को अधिक प्रभावित करता है। विटामिन 'ई' की कमी के कारण चूजों में उन्माद हो जाता है, जिसे उन्मादी चूजे (क्रेजी चिक) कहते हैं। इसकी कमी से ग्रसित चूजे इधर–उधर भागने–दौड़ने लगते हैं तथा लड़खड़ा कर चलते रहते हैं, अंत में गिर पड़ते हैं, आंख बन्द कर बैठे रहते हैं और 24 घंटे के अंदर इनकी मृत्यु हो जाती है।

**उपचार**

इसकी कमी से ग्रसित मुर्गियों को विटासेप्ट की 0.25 से 0.5 मि.ली. मात्रा की सूई मांस में सप्ताह में एक बार देनी चाहिए। प्रभावित चूजों को पोलकॉन की एक ग्राम मात्रा 10 कि.ग्रा. दाने में मिलाकर खिलाने से लाभ मिलता है। प्रभावित मुर्गियों को कोन्सीटोन लिक्विड पिलाने से भी लाभ मिलता है।

**अण्डों की कैंडलिंग (भ्रूण परिक्षण)**

ग्रामीण पारंपरिक मुर्गी–पालन व्यवस्था में मुर्गियों से प्राप्त सभी अंडे मुर्गियों के नीचे सेने हेतु रख दिय जाते हैं। इस प्रकार मुर्गी इन अन्डो को, प्राकृतिक विधि से सेने का कार्य करती है, जिससे 21 दिनों पश्चात चूजे उत्पन्न होते हैं।

अंडे दो प्रकार के होते हैं – शाकाहारी एवं मांसाहारी। शाकाहारी अंडे मादा पक्षियों नर की अनुपस्थिति में दिए जाते हैं, अतः इनमें भ्रूण (बच्चा) नहीं होता। मादा पक्षियों को नर से प्रजनन कराने के बाद मांसाहारी अंडे प्राप्त होते हैं जिसमें भ्रूण उपस्थित रहता है। इस प्रकार के अण्डों से, मुर्गी के नीचे 21 दिनों तक रखने के पश्चात चुजें निकलते हैं।

मुर्गी द्वारा सेने हेतु अण्डों को मुर्गियों के नीचे रखने से पहले भ्रूण परीक्षण करने वाली मशीन को कैंडलर कहते हैं। साधारणतः यह टिन पर बल्ब लगा होता है तथा दूसरे सिरे पर एक छेद होता है। जमीन पर अँधेरे कमरे में कैंडलर के बल्ब को जलाकर, दूसरे सिरे पर अंडा रखा जाता है। ध्यान से देखने पर यदि अंडे के चौड़े सिरे कि ओर, अंडे के भीतर, कालापन लिए एक छोटा गोला तैरता हुआ दिखाई दे, तो वह भ्रूण– रहित अर्थात शाकाहारी होगा।

यह परिक्षण कार्य मुर्गी के अंडा सेने से चौथे–पांचवे दिन पर करना चाहिए. जब भ्रूण न हॉट उसे स्वयं के खाने अथवा बेचने में उपयोग किया जा सकता है।

कैंडलर के स्वरुप में ग्रामीण परिस्थिति को देखते हुए सुविधा एवं उपलब्ध संसाधन अनुसार बदलाव कर कैंडलर बनाया जा सकता है।

**डब्बा कैंडलर**

1. ग्रामीण परिवारों में प्रायः प्रत्येक घर में टिन का डब्बा आसानी से उपलब्ध रहता है। एक साधारण टिन के डब्बे को लेकर उसमें छैनी–हथौड़ी की सहायता से डब्बे की गोलाई के मध्य में एक लगभग 3 से. मी. व्यास का गोला काटें।

2. डब्बे के निचले सिरे का बल्ब के होल्डर जितने साईज का गोला काटकर उसमें होल्डर फिट करें तथा बिजली कनेक्शन से जोड़ते हुए बल्ब जलाएं।

3. इस डब्बे को जमीन पर रखने के लिए एक स्टैंड भी बनाया जा सकता है। अथवा डब्बे को ऐसे ही रखा जा सकता है।

- बिजली की अनुपलब्धता होने की स्थिति में एक बार में 10–15 तक अण्डों का भ्रूण परिक्षण करने हेतु टॉर्च का इस्तेमाल भी किया जा सकता है।
- इस हेतु साधारण पाउडर या टिन का लंबा सा डब्बा ले लें तथा नीचे की पेंदी निकालकर ऊपरी सतह पर एक छेद कर दें तथा टॉर्च को जलाकर डब्बे के अंदर रख दें।
- कार्ड बोर्ड को गोलाई में मोड़कर टॉर्च के आकार का बना लें। कार्डबोर्ड का एक ढक्कन को लगकार टॉर्च की रौशनी में अण्डों का भ्रूण परिक्षण करें।
- किसी भी कैंडलर का नियमित उपयोग से पहले, पद्धति का अच्छा अभ्यास कर लेना अति आवश्यक है।

**कैंडलिंग से लाभ**

कैंडलिंग से भ्रूण रहित अंडे, जिन्हें अन्यथा कुडूक मुर्गी की नीचे सेने हेतु रख दिया जाता है, को अलग कर खाने अथवा बेचने में उपयोग किया जाता है। इस प्रकार अण्डों को बर्बाद होने से बचाया ही जा सकता है तथा इससे अतिरिक्त आय का साधन भी बनाया जा सकता है। साथ ही सिमित अंडे होने के कारण कुडूक मुर्गी के शरीर का तापमान सभी अण्डों पर समान रूप से पड़ता है एवं अंडे से चूजे निकलने का अनुपात (हैचिंग प्रतिषत) अधिक होता है।

## घर के अहाते में 20 '*कारी देवेन्द्रा*' प्रजाति की मुर्गीयां पालने की आर्थिकी

| क0सं0 | विवरण | 20 '*कारी देवेन्द्रा*' प्रजाति की मुर्गीयां पालने की लागत |
|---|---|---|
| 1 | **परिवर्ती लागत** (अंतपंइसम बवेज) | |
| (क) | एक दिन का चूजा / रु0 16 | 320 |
| (ख) | 45 दिन तक आहार पर खर्च (1.35 किलो ब्रायलर स्टार्टर फीड कुल आहार की मात्रा = 27 किलो / रु 36.00 प्रति किलो) | 972 |
| (ग) | टीका करण की लागत / रु 2.00 प्रति चूजा | 40 |
| (घ) | दवा व समपूरक आहार पर व्यय / रु 3.50 प्रति चूजा | 70 |
| | **योग** | **1402** |
| 2 | स्थिर लागत (पिगमक बवेज) | |
| (क) | बैकयार्ड पोल्ट्री के लिये मुर्गीशाला | 700 |
| (ख) | फीडर व ड्रिंकर | 240 (स्थानिय सामग्री का प्रयोग) |
| (ग) | पोल्ट्रीशाला का अवमूल्यन 33.33 : प्रति वर्ष | 233.31 |
| (घ) | मजदूरी 18 घंटे/माह के दर से 18 माह के लिये 41 दिन / रु 200 प्रति दिन | 8200 |
| | **योग** | **10775.31** |
| | आय/लाभ | |
| | 9 मुर्गीयां (170 अंडा उत्पादन/मुर्गी/वर्ष) अंडा बिक्री / रु 10 प्रति अंडा | 15300 |
| | मुर्गों की बिक्री (3 किलो वजन / रु 250/किलो शरीर वजन पर) | 6750 |
| | एक वर्ष बाद मुर्गी / रु 200 प्रति मुर्गी बेचकर | 1800 |
| | **योग** | 23850 |
| | **शुद्ध आय** | **13074.69** |

————————————————————000000000————————————————————

# अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें–

## कृषि विज्ञान केन्द्र–द्वितीय, कटिया, सीतापुर, उ0प्र0

**आलेख**– दया शंकर श्रीवास्तव, सचिन प्रताप तोमर, शैलेन्द्र कुमार सिंह एवं शिशिर कान्त सिंह

**सम्पादन एवं निर्देशन**– आनन्द सिंह, वैज्ञानिक पशुपालन

**उत्प्रेरणा एवं सहयोग**– सीड डिवीजन, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली, भारत सरकार

**परियोजना**– ग्रामीण महिला तकनीकी पार्क

**प्रकाशक**–कृषि विज्ञान केन्द्र–द्वितीय, कटिया, सीतापुर

**मुद्रक**– रामा प्रेस, सीतापुर

**प्रकाशन संख्या**– DST-RWTP/20-21/5